Review-20

Founder's Day Special

Issue No. 1079

Principal's Message

Dear Readers

Today we witness the clocking of another year in the history of this great institution. The only difference is that we come together on this 123rd Founder's Day, with fervor and enthusiasm but on a virtual platform. We have surely been able to address the challenges and negate the negatives in the times of the pandemic through team work and perseverance. This idea of mine has been validated by all stakeholders from time to time.

As the custodian of this hallowed institution, I will say that I am proud of the Scindian fraternity, both teachers and students, who have responded most positively to the unprecedented change, with all courage and determination.

The following pages bring to you the plethora of thoughts, both from teachers and students as well as the Old Boys who have carved the 'thinking' niche in this glorious institution bringing the utmost dynamism in its functioning.

Take care and all the best!

Madhav Deo Saraswat

Congratulations!

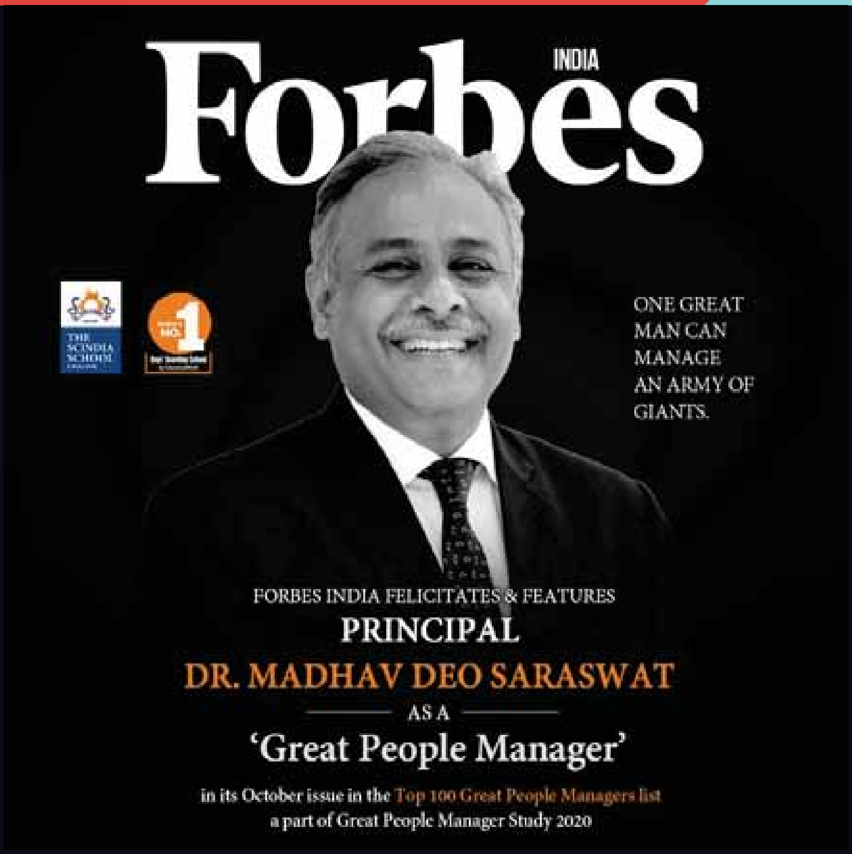

Dr Madhav Deo Saraswat, Principal, The Scindia School has been recognised as a "Great People Manager" by Forbes India and has featured in the list of Top 100 Great People Managers- GMP, in their October edition. It is a moment, wherein we take pride of Dr Saraswat's impeccable leadership and also of the fact that the world has applauded his credibility yet again. This year, Forbes India witnessed the participation of more than 6200 managers in the assessment- Great People Manager Study 2020 (GPMS 2020). The Top 100 Managers' list includes managers from all levels. The Study was analysed through a 4-layered methodology.

Special Astachal

On 2nd October the School observed the Special Astachal. Kartikeya Kulshrestha and Aditi Joshi welcomed the gathering to the spiritual waterhole of the school, the Astachal on the occasion of the 151st Birth Anniversary of Mahatma Gandhi. Floral tributes were paid to the 'eternal pilgrim'. Arsh Mishra brought home the values of the Mahatma and Ahana Bhattacharya shared some anecdotes on the life of Lal Bahadur Shastriji. The singing of *Vaishnav Jan* and the tune of *Raghupati Raghav Raja Ram* played melodiously on the flute by Krishlee Pathak, transported us into a different land.

Debates Galore!

The 47th Platinum Jubilee Memorial Inter School English Debates were held virtually on 9th and 10th October 2020. Fourteen prestigious schools of the country participated in it. The Pinegrove School, Subathu became the Winners of the event and Welham Girls' School, Dehradun became the Runner up. The judges who graced the occasion were: Mr Amarnath Dar (Ex- Rn, 1958; Former Principal, The Scindia School; Madhav Awardee), Ms Suniti Sharma (Former Principal, Maharani Gayatri Devi Girls' School, Global Indian International School, Scindia Kanya Vidyalaya, Gwalior; Headmistress, The Scindia School; President Jaipur Sahodaya), Ms Sandeepa Rai (Principal, Sun City World School, Gurugram) and Ms Dipika Rao (Principal, DPSGS). We extend our heartfelt gratitude to our judges for taking out time to be with us.

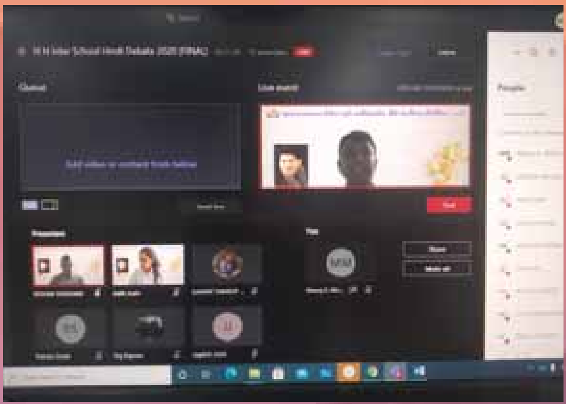

The 17th Maharaja Madhavrao Scindia Memorial Inter School Hindi Debates were held virtually on 29th and 30th September 2020. Twelve prestigious schools of the country participated in it. The first round was in the Oxford format which was further divided into two pools. The second round was in the Turn Coat format. The last and the final round was in the Cambridge format in which six schools competed for the coveted trophy. The Scindia School was declared as the Winners of the event and Maharani Gayatri Devi Girls' School, Jaipur, became the Runner Up. Akshat Karwa and Manisha from The Scindia School and Maharani Gayatri Devi, respectively, were adjudged the Best Speakers of the Final round.

देशभक्ति के स्तम्भ: महाराणा प्रताप

अंश थावानी , 9 – D, शिवाजी सदन

इतिहास मेरा प्रिय विषय रहा है।ऐतिहासिक गुलाबी शहर जयपुर में रहते हुए मैंने अनेकों ऐतिहासिक इमारतें व उनसे जुड़ी कहानियों को जानने का प्रयास किया है विशेषकर राजस्थान व महाराष्ट्र से जुड़े किले, भवन व उनकी कहानियों ने मुझे आकर्षित किया है। मुझमें उन्हें पढ़ने और समझने की इच्छा पैदा हुई | इस लॉकडाउन के दौरान मैंने वीर छत्रपति शिवाजी महाराज व महाराणा प्रताप जैसे अनेक देशभक्त वीरों की कहानियाँ पढ़ीं। इसी क्रम में मैं नाम लेना चाहूंगा महाराणा प्रताप का जिन्होंने अपनी मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

भारत एक ऐसा देश है जिसकी ज़मीन पर अनेक महान,आदर्श,पराक्रमी योद्धाओं और राजाओं ने जन्म लिया | इनमें से कुछ ही है जिन्होंने बिलकुल एक अलग मुकाम हासिल किया है, वह हैं महाराणा प्रताप | महाराणा प्रताप आत्मबल, पराक्रम, साहस के एकदम सटीक उदाहरण हैं |इनका आत्मबल ही इनकी पहचान है | जहाँ अकबर इतने राज्य जीत चुका था वहीं महाराणा प्रताप ने अपना छोटा- सा मेवाड़ अकबर के हाथों में नहीं जाने दिया | वह कहा करते थे "मातृभूमि और अपनी माँ में तुलना करना और अन्तर समझना निर्बल और मूर्खों का काम है।"उनकी यही बात उन्हें महाराणा बनाती थी। इनका सैन्य बल थोड़ा कम था इसीलिए वह अपना राज्य-सुख त्यागकर भीलों के बीच रहकर उन्हें तैयार करते थे युद्ध के लिए | जब भी कोई इनसे मिलने आता और कहता था कि आप इतना संघर्ष क्यों कर रहे है? तो वे कहा करते थे "अपने कीमती जीवन को सुख और आराम की जिन्दगी बनाकर नष्ट करने से बढ़िया है कि अपने राष्ट्र की सेवा करो।" जब वे भीलों के बीच रहते थे तो वे कच्चा खाना, कच्ची सब्जियाँ, पत्ते पर खाना खाया करते थे। पैरो मे जूते नहीं, रात मे सोने के लिए बिस्तर नहीं, बरसात के मौसम में सिर पर छत नहीं |

सोचिए, महाराणा ने कितना संघर्ष किया होगा और वे कहा करते थे "एक शासक का पहला कर्त्तव्य अपने राज्य का गौरव और सम्मान बचाने का होता है।" इनके पास कई प्रस्ताव आए इन्होंने सब ठुकरा दिए| एक प्रस्ताव तो था कि आधा भारत तुम्हें दे देंगे, इन्होने वह भी ठुकरा दिया। यह नाता इनका अपनी मातृभूमि से था। इनकी ज़िन्दगी में सबसे जोखिम भरा युद्ध था हल्दीघाटी का युद्ध | इस युद्ध में इतना खून बहा था कि मिट्टी का रंग हल्दी जैसा हो गया जो रंग आज भी हमें देखने को मिलता है और इसके निकट ही एक रक्त तलइया भी है। महाराणा शस्त्र-विद्या में बहुत निपुण थे और उनके शस्त्र बहुत ही भारी और धारदार थे। इनका कद साढ़े सात फुट का था|इनका भाला 80 किलो का था, कवच 72 किलो का था, इनकी तलवार 25 किलो की थी। इनका पूरा भार 208 किलो का हो जाता था। इनके शत्रु इनसे इसलिए डरा करते थे क्योंकि इनका भाला,तलवार ,कवच ही इतना वज़नदार था। जब अकबर का सेनापति बहलोल खान इन पर हमला करने पीछे से आया तभी महाराणा ने अपनी धारदार तलवार से बहलोल खान का शरीर उसके घोड़े समेत आधा चीर दिया। यही कारण था कि अकबर कभी इनके सामने नहीं आता था क्योंकि महाराणा थे ही इतने ताकतवर। इनका एक प्रसिद्ध घोड़ा चेतक जो कि हल्के नीले रंग का था सोचिए वह कितना भार उठाता होगा एक घोड़ा होकर। चेतक का डील- डौल बहुत विशाल था। युद्ध के दौरान चेतक को हाथी का मुखौटा पहनाया जाता था ताकि हाथी उसे पहचान न पाएँ और हाथी समझकर उस पर वार न करें।यह चेतक ही ऐसा एकमात्र घोड़ा है जिसके ऊपर कई कविताएँ बन चुकी हैं जिसमें डॉ श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा रचित कविता " चेतक की वीरता" बहुत प्रसिद्ध है। इस चेतक ने ही राजा मान सिंह के हाथी पर पर चढ़ाई करके महाराणा की मदद की और इसी युद्ध में उसका एक पैर कट गया फिर भी पाँच किलोमीटर भागकर बहुत ही ऊँचा नाला कूदकर महाराणा को बचा लिया और अपने प्राण दे दिए। चेतक जैसा ही महाराणा का एक हाथी भी था जिसका नाम रामप्रसाद था। इसने कई घोड़ों और कई हाथियों को मार दिया। बाद में अकबर के हाथियों ने उसे घेरकर पकड़ लिया और उसे रखकर बहुत कुछ खाने को दिया पर उसने कुछ नहीं खाया और प्राण त्याग दिए।

अकबर ने कहा "जब मै महाराणा के हाथी को नहीं हरा पाया तो उन्हें कैसे हराऊंगा|" महाराणा अपने दोनों जानवरो की मृत्यु पर बहुत दुखी हो गए क्योंकि वह उन्हें बेटे के समान प्यार करते थे। वह हल्दीघाटी का युद्ध हारने के बाद बोले "चाहे हल्दीघाटी के युध्द ने मेरा सर्वस्व छीन लिया हो, पर इसने मेरी गौरव और शान को और बढ़ा दिया।" इनकी विचारधारा इनका मातृभूमि से नाता बहुत ही अद्भुत था, वे संघर्ष से कभी डरा नहीं करते थे और कहा करते थे "मनुष्य अपने कठिन परिश्रम और कष्टों से ही अपने नाम को अमर कर सकता है।"सोचिए इतने निडर, बहादुर व्यक्ति थे महाराणा, यही कारण था क्योंकि उन्होंने संघर्ष बहुत किया और लोगों की यादों और दिलों में अमर हो गए। आज भी महाराणा प्रताप को पूजा जाता है मेवाड़ में। इनकी सबसे महत्वपूर्ण बात वो थी "अपनो से बड़ों के आगे झुककर समस्त संसार को झुकाया जा सकता है।"

इनके बुलुंद हौसलों ने इनको एक अलग मुकाम दिया। यही कारण था जिसकी वजह से न तो इन्हें मुगल पकड़ पाए, न मार पाए। आत्मबल तो इतना था कि कोई भी इन्हें कुछ भी कह ले, ये अपने आप पर भरोसा रख कर हर तूफ़ान हर आंधी पर विजय प्राप्त कर लेते थे। सैन्य-बल बढ़ाना था वो भी बढ़ा लिया, प्रजा को बचाना था वो भी किया। ऐसे महान व्यक्ति थे महाराणा प्रताप।

महाराणा प्रताप जैसे बहुत कम राजा होते हैं जो अपना समस्त जीवन अपनी प्रजा और मातृभूमि की रक्षा और मान-सम्मान बढ़ाने के लिए अपना सब कुछ त्याग देते हैं।

अत: महाराणा प्रताप जैसे ही राजाओं ने इस भारत वर्ष का गौरव और मान-सम्मान बढ़ाने में एक अहम् भूमिका निभाई है। मैं उन्हें शत-शत नमन करता हूँ।

Army of Medical Corps

Dr Sanjay Kolte (Ex- Md, 1983)

Illustration by Arjun Bhatt (Md ,2023)

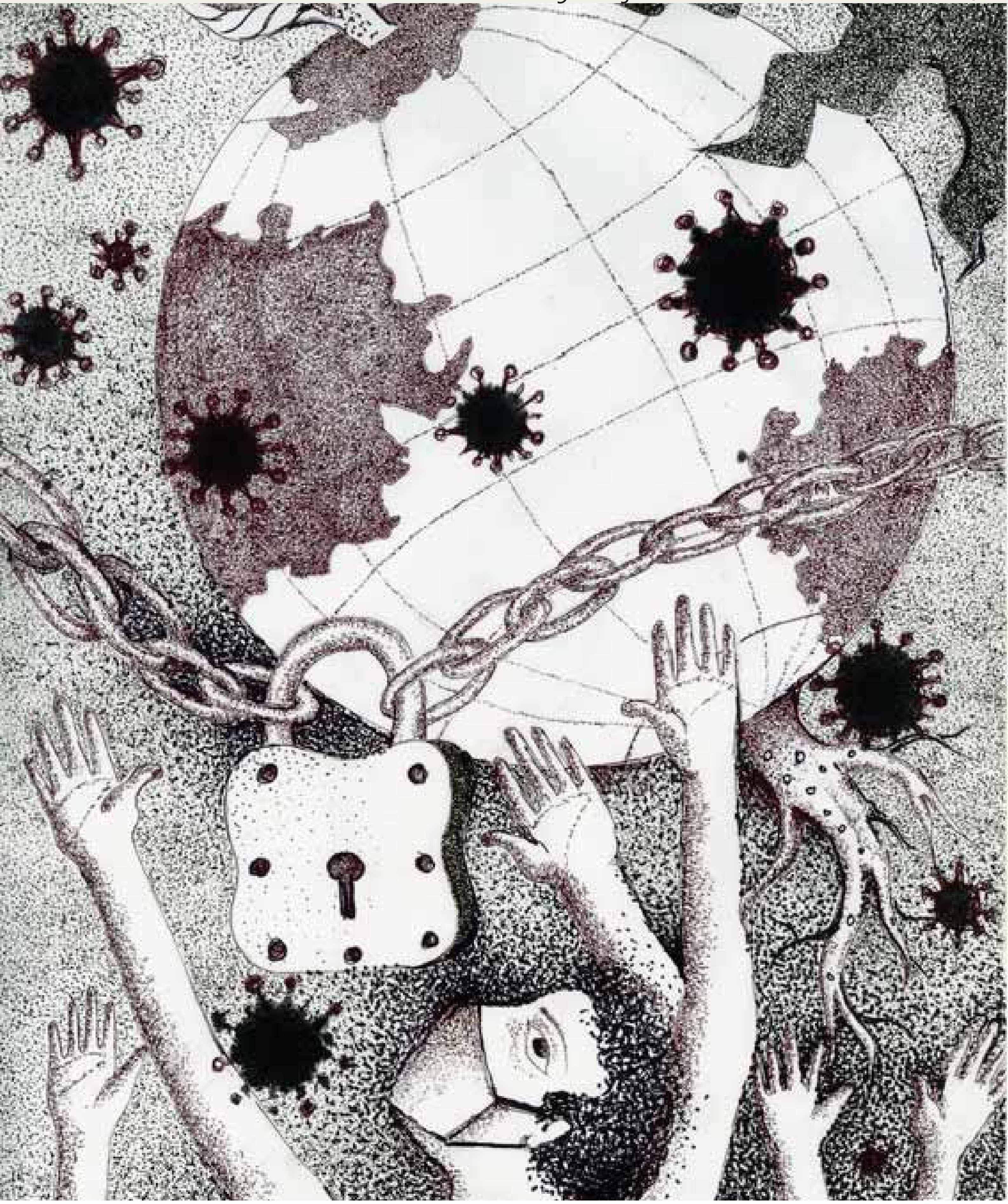

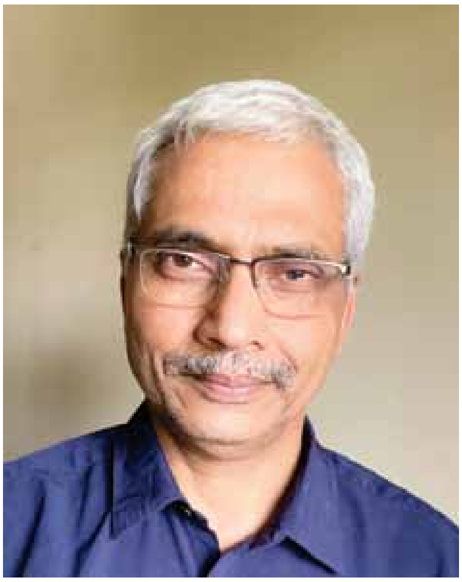

“Corona warriors“ is probably the youngest neonate in the literary world of writers. An honourable reference, majorly to the medics and paramedics involved in care of COVID-19 patients, it connotes the existence of an ongoing war. Rightly so.The pandemic is a war being fought on many fronts: health, logistics, infrastructure, public sector, economy etc. But the foot soldiers who confront the enemy in a hand to hand combat are indeed the doctors and their paramedical associates - the Warriors. What makes fighting this war maliciously difficult for the warriors is the sudden eruption and surreptitious nature of the enemy.

Appearing unannounced, out of nowhere; it gave no time to mankind either to arrange contingencies or even to identify weapons to fight it with. We were sitting ducks for the alien in this war. Many of our brethren simply evaporated like the first drops of rain in a desert. Many more succumbed enduring great sufferance. All departed lonesome in closed ICUs, craving for a glimpse of their loved ones at the time of departure. Such a ruthless and reckless attack this has been. A force majeure which left many a homes crumbled, many families truncated and many relations handicapped. According to the Indian Medical Association’s Covid-19 data as on September 16; of the 2,238 doctors infected with Corona across the country, 382 lost their lives - A fatality rate of 17% compared to 1.7% in the general population. A grim reality.....

Today when the war is at its fiercest worst; Standing firmly behind and treating every injured warrior like the Army Medical Corps are the selfless doctors who treat the injured in the ICUs of Covid hospitals. No finite respect can ever befit their contribution and hence the title of “Medical Corps” in this war. Behind sealed doors they work silently and ceaselessly. Suffocating themselves in their PPEs, they strive to breathe fresh air into lungs of the injured. The PPE itself is a furnace which has bred a new set of professional hazards like kidney stones and failure caused by prolonged hours of encagement. Donning it literally roasts them with no water and even an occasional whip of cool air to soothe their skin. Putting their own lives at stake, leaving their own families concerned, waiting and anguished, they go about their jobs like well programmed computers. Their brains function as serene, composed centres of reflex activities, saving lives of hundreds of patients. The virus abounds in unpredictability .

It’s frequent mutations, omnipotent survival combined with untested treatment protocols and the compressive pressures of legal & medical guidelines only adds to the difficulties of these indefatiguable corps. Not to forget the ever looming threat of the “cytokine storm”. The suddenness, enormity and lethality with which the cytokine storm strikes, resembles Hitler’s ill famed “blitzkrieg” of World War II which hinged its success on catching the enemy unaware while attacking with an overwhelmingly abundant force. To avert these mishaps they remain sleepless and continuously think on their feet, mentally exhausting themselves. Even when off duty, their responsibility doesn’t dim. Maintaining a high morale, they, pacify their inquisitive & pious looks and satiate the emotionally starved psyche of these socially disconnected souls with assurances of certain recovery. It’s this resoluteness and fortitude of these Corps which has prevented the pandemic from turning into a pandemonium. They serve tirelessly, discharging the cured and admitting new ones from the ever burgeoning wait lists, ignorant of the fact that if one day they themselves fall to the bullets of the enemy, they may not get a bed in these very ICUs they are ceaselessly churning out life from. I bow to these valiant guardians of life !

The gloom of this pandemic can’t be wished away, but it already stands defeated by the explosion of cooperation and universal patience portrayed by people from all walks of life. The austerity in utilisation of scant resources observed and the scarcity endured by them has only emboldened the optimism that the possibility of our army of Medical Corps winning the war against this cruel and tenacious enemy .....isn’t unreal .

HUMAN CIVILIZATION: SCIENCE AND TECHNOLOGY

The following article by Chirag Rathi (Md, 2021) is among the top eleven essays awarded by ISRO.

The human civilisation proudly wears its impeccable advances in technologies for information, health and transportation. Despite our advances, we continue our struggle with the problems of environmental degradation, overpopulation and an increased threat of proliferation of weapons of mass destruction. This fundamentally redefines how we live and work. Although sometimes, this redefinition is not how we mould it into but how nature communicates to us. The post coronavirus pandemic scenario has revolutionized how we live and work entirely. With the reducing priority of many non-essential scientific researches, there is one area of research and development that is still as important as ever because of the sheer unpredictability of what heaven might one find in this haven. Space science is an integral part of human development, both in terms of conquering the unconquerable and nurturing global togetherness and construing the supreme bliss of science to create an impact. The possibilities bestowed upon us in the research area of space science and technology has no limits as creativity thrives on a consistent diet of challenges and opportunities. With the pandemic as mentioned, I believe to possibly observe some necessary rationalizing in the budget provided by the governments of the world in the future as a huge challenge. This notion can be looked upon as an opportunity as well, as every time scientists have seemed to raise the bar of performance and economic capability and with the induction of private players in the industry formerly managed by institutions, it opens a new and much wider horizon.

Some possibilities that we precede now with these facilitators are enhancement of application of space data like a much more precise navigation, agricultural and security surveillance and rectify our mistakes by a more comprehensive earth environment monitoring. With the limitation of a vantage point from space to majority of the nations, researchers might be willing to grab any opportunity ajar to create another vantage point as a national space station or a collaborated space station to improve the efficacy of observational research. These space stations will also help astronauts to withstand the space environment for long periods, which in time may help create artificial habitats in space and on other planets to support a reasonable quality of human life. Also the possible confirmation of vast deposits of water ice likely lurking at the moon's poles could be tapped to help spur a sustainable economic and industrial expansion into space which ultimately leads to colonization of mars or other capable exoplanets which is well in eye in the next two decades.

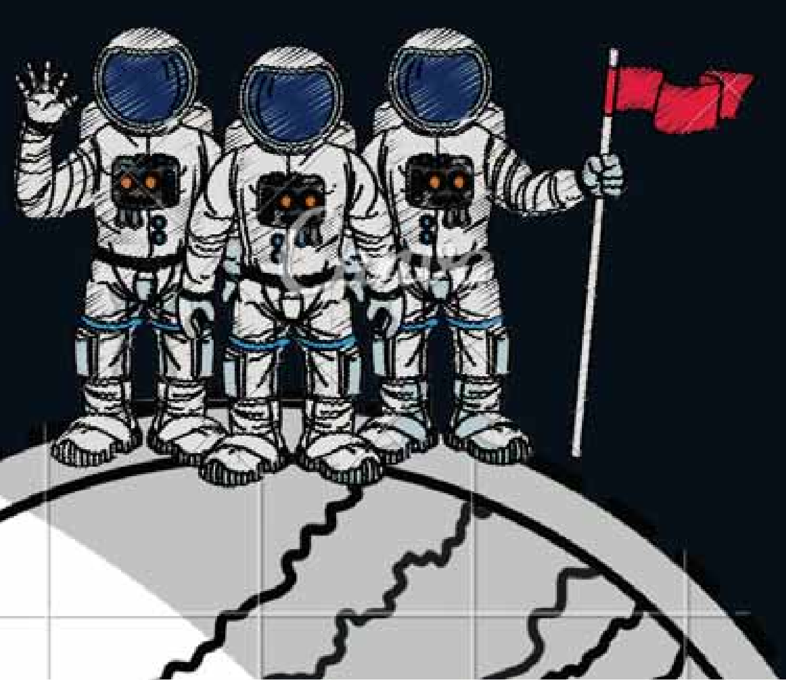

Mentioning futuristic possibilities, the much-awaited space tourism which can emerge in next two decades provided we perfect the spaceflight safety which can only be achieved after undertaking ample of crewed missions. It is commendable how humans have even performed a soft landing on a comet with which arises the possibility of asteroid mining which might put us in jaw-dropping awe or immense profits. Some other possibilities I find are developing a more efficient system of re-usable rockets with better procurement of separated parts to improve economic self-sufficiency and environmental friendliness. I also find investing time and funds in green propellants worthwhile as with the recent strive to save lives, we have damaged the earth too much. Another possibility is that of inter- planetary exploration and exploitation because we share this planet with innumerable species and in our endeavours, we endanger them to various threats which might in turn destroy diversity. With the possibility to excel comes the obstacle to stumble. I sincerely believe in what John Adams, the second President of the USA expressed, 'Every challenge is an opportunity in disguise' , whereas a slight modification can be brought into the philosophy considering the complexities faced in frontier research area of space science and technology. It is important to acknowledge that every opportunity is no less than a challenge, in breaking through the extreme limit of understanding and achievement in a completely unknown arena of nothingness, yet everything. The challenges that we precede are very severe, the most dangerous of all being militarization of space.

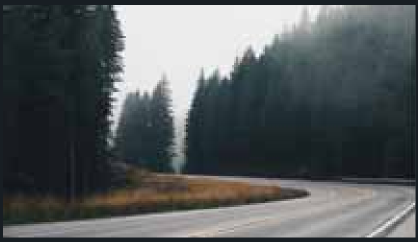

I fear that with the global access to space, the era of expansion might take rebirth by neglecting the space treaty and raise conflicts in terms of unlawful possession of space. By historical narrative, it is important to prevent the space from becoming a lawless "wild west" where the strongest can take an unfair advantage, just like international waters being wrecked by pirates. Manipulation of outer space treaty and convention on international liability of damage caused by space object can also pose a challenge as nations might deny responsibility. Some technical challenges that we might face in the next two decades are over-crowding of radio-frequency spectrums for communication and the need to sustain the space environment which is threatened by the growing amount of debris which forms a minefield. One possibility which arises here is adopting 'in-orbit servicing' and active debris removal. This is not a completely new idea as the space shuttle STS-51-A brought back two old satellites, which is brilliant to remove debris and needs more mainstream utilisation. With every nation upholding its sovereignty, it is important to educate that space is not another field to conquer and dominate, but it is one that incorporates global co-operation for the collective good of humankind. Hence, international regulatory framework should prevail over national regulations or it might inflict great challenge in progress. To find a solution is also a challenge as a great solution is one that is acceptable to all the stakeholders including commercial organizations and political entities. We know that perhaps earth would not be habitable in future and to survive, we may have to move. Some people might argue that it is farfetched, but times like today force me to ponder whether earth is the only one? All these challenges are a path, a path to achieving our potential and survive the nature's wrath. Who knows, we might be having our evening tea on Kepler-62f in 20 years.

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
बेंगलुरु, पिन - 560094

Government of India, Department of Space
Indian Space Research Organisation
Bengaluru, PIN - 560094

प्रमाण पत्र
CERTIFICATE

Registration Number : ICC-4122101354

प्रतिभागी / Participant CHIRAG RATHI
कक्षा / Class XII विद्यालय / School THE SCINDIA SCHOOL, GWALIOR
MADHYA PRADESH - 474008

has displayed appreciable performance in Essay Writing and ranked amongst Top 11 - 500, at All India level in Essay Competition (English), Class 11 & 12 category, of ISRO Cyberspace Competitions - 2020.

FROM THE HAZE OF YESTERDAYS...

FROM THE HAZE OF YESTERDAYS...

FROM THE HAZE OF YESTERDAYS...

FROM THE HAZE OF YESTERDAYS...

FROM THE HAZE OF YESTERDAYS...

“मैं अकेली ही चली थी जानिब-ए-मंज़िल मगर..."

(संगीत एवं हिंदी अध्यापिका श्रीमती अहिल्या शिंदे से साक्षात्कार)

साक्षात्कारकर्ता: श्री गनपत स्वरूप पाठक, हिंदी-विभाग
८ अक्टूबर २०२०

श्रीमती अहिल्या शिंदे सिंधिया विद्यालय की आधार स्तम्भ हैं|सन १९८५ में आपने विद्यालय में संगीत और हिंदी भाषा के अध्यापन का कार्य आरम्भ किया| बीते पैंतीस वर्षों में उन्होंने सीखा भी और सिखाया भी बहुत| “स्वर कोकिला" के नाम से प्रसिद्ध श्रीमती शिंदे ने संगीत के अलावा “द्रौपदी चीरहरण”, “गीता-उपदेश", “गढ़ आया पर सिंह गया” “मणि-चोरी” एवं “रास-लीला” जैसे अद्भुत नाटकों का मंचन करवा कर चहुंओर ख्याति बटोरी| सद्भाव और सहृदयता से उन्होंने सभी को अपना बना लिया था| ऐसे ही एक निश्छल और प्रेरक व्यक्तित्व से रू-ब -रू होने का सौभाग्य मुझे मिला| ये अनौपचारिक बातचीत बड़ी रोचक रही| आशा है इस भेंटवार्ता को पढ़कर आप उनके व्यक्तित्व के बहुत-से छुए-अनछुए पहलुओं से वाबस्ता होंगे| प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के कुछ रोचक पल!

प्रश्नक - सिंधिया स्कूल की शिक्षा यात्रा को कुछ पंक्तियों में कैसे कहेंगी?

अहिल्या जी - “मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंज़िल मगर, लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया” इस तरह की ही कुछ यात्रा रही सिंधिया स्कूल में कि लोग जुड़ते गए कारवाँ बढ़ता गया| पहले मैं अकेलीं थी| सबसे पहले श्रीमती धीर से मिली जो अँग्रेज़ी नाटक करवाया करती थीं| फिर श्री वी. एस. सक्सेना जी जो हिंदी-विभाग के अध्यक्ष थे| और फिर श्रीमती यशोदा मुख़र्जी का सहयोग भी प्राप्त हुआ|साथ ही श्री मनोज कुमार मिश्रा जी के साथ रचनात्मक कार्य किये और अब ये यात्रा जैसे खत्म होने को है| जैसे-जैसे लोग जुड़ते थे, वैसे-वैसे लोग सेवानिवृत्त हो, इस कर्मभूमि से बिछड़ने लगे| गोपालदास नीरज के शब्दों में कहें तो “कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे!”

प्रश्नक - संगीत से आपकी मुलाकात कब हुई?

अहिल्या जी - मेरी माताजी उन दिनों अंबिकापुर में रहा करती थीं|मेरे पिताजी डिप्टी कलेक्टर के रूप में दूसरे शहर भिंड में पदस्थ थे|ऐसे में आसपास की महिलाओं से उनकी मित्रता हो गयी और उन्होंने एक महिला-मंडल बनाया| सभी ने सोचा कि हम अपनी-अपनी कोई "हॉबी क्लास" शुरू करते हैं| किसी ने सिलाई-कढ़ाई की सिखाने का सोचा तो किसी ने नृत्य सिखाने की कक्षाएँ खोलीं, किसी ने चित्रकारी सिखाने का निश्चय किया|मेरी माता श्रीमती सुशीला सुर्वे ने संगीत की विधिवत शिक्षा देने का निर्णय लिया| यह कहना यहाँ समीचीन होगा कि मेरी माता ग्वालियर की ही थीं और उन्होंने प्रख्यात शास्त्रीय संगीतज्ञ बालसाहेब पूँछवाले जी से गायकी सीखी थी|जब पहले दिन कक्षा आरम्भ हुई तो कोई नहीं आया| मैं घर में सबसे छोटी थी; वहीं खेलकूद रही थी|माताजी ने कहा कि जब कोई नहीं आ रहा है तो तुम आ जाओ और मुझको बिठाकर मेरी माता ने संगीत की शिक्षा देना आरंभ किया| संगीत का अभ्यास सुनकर आसपास के लोग वहाँ आए और पूछने लगे कि ये किसकी मीठी आवाज है| तब से फिर और लोग भी उस विद्यालय में आने लगे| इस तरह मेरी माता ने संगीत से पहले-पहल मिलवाया| मैं उनकी पहली छात्रा बनी और बाद में यही कक्षा अब अरुण संगीत महाविद्यालय, अंबिकापुर के नाम से आज भी विख्यात है|

प्रश्नक - आपने अब तक कितने नाटक निर्देशित किए हैं और आपको अपना निर्देशित किया हुआ कौन-सा नाटक सबसे अधिक पसंद है?

अहिल्या जी - मैने लगभग २५ नाटक इस विद्यालय में करवाए हैं| "द्रौपदी चीरहरण" मेरा संस्थापना-दिवस पर करवाया गया सबसे पहला नाटक था, जिसे बहुत सराहा गया| इसके बाद जो सिलसिला शुरू हुआ तो चलता गया| शिवाजी महाराज, गढ़ आया पर सिंह गया, शाहजी के जूते, मृगनयनी, जरासंध-वध, पुष्पनगर की राजकुमारी, मणि-चोरी, रासलीला, चाण्डालिका नृत्य-नाटिका, गीता-उपदेश आदि| उन सब में 'गीता- उपदेश" मेरा अब तक का सबसे अच्छा नाटक रहा है जिसे मैं आज भी याद रखती हूँ|

प्रश्नक - आपने अब तक कितने नाटक पढ़े है और उनमें सबसे पसंद का नाटक कौन-सा है?

अहिल्या जी - रवीन्द्रनाथ ठाकुर के लिखे हुए नाटक बहुत पढ़े हैं| वृंदावन लाल वर्मा के लिखे नाटक भी पढ़े हैं| अभिज्ञान शाकुन्तलम् पढ़ा है| पर इन सब में मुझे मोहन राकेश का लिखा नाटक "आधे-अधूरे" बहुत पसंद है| जिस तरह नाटक में मध्यमवर्गीय परिवार की कठिनाइयों और दुविधा को बताया गया है, वैसा और कहीं देखने को नहीं मिलता|

प्रश्नक - आपकी पसंदीदा किताब कौन-सी है? अब तक पढ़ी कहानियों, उपन्यासों और कविताओं में सबसे अच्छा क्या लगा?

अहिल्या जी - मेरी पसंदीदा किताब 'दिव्य संगीत' है जिसमें शास्त्रीय संगीत को बहुत अच्छे ढंग से समझाया और सिखाया गया है|"दो बैलों की कथा" कहानी मुझे सबसे अधिक पसंद है| उपन्यासों में मुझे "रंगभूमि" बहुत अच्छा लगा|इसमें सूरदास का पात्र बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है| इसके अलावा प्रेमचंद के दूसरे उपन्यास 'गोदान' और 'गबन' भी मुझे बहुत पसंद हैं|मुझे मीराबाई की कविताएँ सबसे अच्छी लगती हैं|उनका एक पद बहुत सुन्दर बन पड़ा है- "बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ!" और एक और सुन्दर भजन है- "माई री मैं तो लियो गोविन्द मोल!"

प्रश्नक – कौन-कौन से विद्यार्थियों ने आपका नाम रोशन किया है?

अहिल्या जी - शादाब कमाल जिसने चाणक्य की भूमिका के लिए अपना सर मुंडाकर चाणक्य का रोल निभाया, राघवेन्द्रसिंह जिसनें शिवाजी की भूमिका बड़े विश्वास से प्रस्तुत की थी|इसी तरह परिमल पीयूष जिसने गीता उपदेश में श्रीकृष्ण की भूमिका निभाई, एक और नाम आता है मेरी ज़हन में रुद्रभानु सोलंकी का जिसनें बाल शिवाजी की भूमिका इतनी कुशलता से निभाई कि सब लोग देखते ही रह गए|घोड़े पर चढ़कर आना और तरह- तरह की कलाबाज़ियाँ दिखाना हर एक के बस की बात नहीं|इसी तरह हरमीत और मनमीत को मैं कैसे भूल सकती हूँ जो

बच्चे हमेशा मेरे आगे-पीछे रहते थे और अक्सर आकाशवाणी में मेरे साथ जाया करते थे और मेरे सामने बड़े हुए|आज वो फ़िल्म इंडस्ट्री में बहुत बड़े संगीतकार है| प्रख्यात सरोद वादक श्री अमज़द अली खाँ के दोनों सुपुत्र अयान और अमान भी सिंधिया विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने आये थे| संगीत शिक्षिका होने के नाते मैंने उनका भी अभ्यास करवाया| दोनों ही बड़े गुणी विद्यार्थी थे| अयान बड़ा चंचल और अमान उतना ही धीर-गंभीर था |

प्रश्नक - मुझे नहीं लगता कि संगीत के अलावा भी किसी और विधा में आपकी इतनी गहन दिलचस्पी या लगन होगी?

अहिल्या जी - ये आपको लगता है और सभी को लगता होगा, मगर मुझे तरह-तरह के सुस्वाद व्यंजन बनाकर लोगों को खिलाने में बहुत आनंद आता है, मुझे घर को सजाना और बाग़वानी करना भी बहुत पसंद है|

प्रश्नक - आपको कौन- सी फ़िल्म सबसे अधिक पसंद है और आप किस अभिनेता को सबसे अधिक पसंद करती हैं?

अहिल्या जी - जी, मुझे अवतार फ़िल्म बहुत पसंद है और मेरे पसंदीदा फिल्मी हीरो राजेश खन्ना हैं| राजेश खन्ना की एक और फ़िल्म 'अमर प्रेम' भी बहुत अच्छी लगती है|

प्रश्नक - आप के लिए 'छात्र' क्या है और एक 'बच्चा' क्या है?

अहिल्या जी - मेरे लिए कक्षा में पढ़ने वाला हर बच्चा छात्र है|मैं उससे उसी तरह देखती हूँ|सही काम न करने पर समझाती हूँ|जरूरत पड़ने पर डाँटती हूँ|मगर कक्षा से बाहर निकलते ही वह छात्र मेरे लिए अपना बच्चा बन जाता है|

प्रश्नक - एक विद्यार्थी में वे कौन-कौन से गुण होते हैं जो पीढ़ियाँ बदलने पर भी सदाबहार रहते हैं?

अहिल्या जी -मेरे विचार से अध्यापक के प्रति बच्चों का निच्छल प्रेम सदाबहार है| उनकी अध्यापक के प्रति आस्था और श्रद्धा कभी नहीं बदलती|

प्रश्नक - पैंतीस वर्षों के इस कार्यकाल में कौन-सा व्यक्तित्व है जो अभी तक आप भुला नहीं सकी हैं?

अहिल्या जी - वैसे तो हर व्यक्ति का हमारे जीवन में योगदान होता है| सन १९९७ में

जूनियर सिंधिया विद्यालय में प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुनीति शर्मा हुआ करती थीं| उनके स्वावलम्बी, संयमी और आत्मविश्वास से लबरेज व्यक्तित्व ने मुझे गहराई तक प्रभावित किया| वे अपना काम स्वयं करने में विश्वास रखती थीं| जैसे अपने कार्यालय आकर अपनी नाम-पट्टिका स्वयं साफ करना; बागवानी करना, अपने नन्हें बच्चे जयदीप को पीठ पर लादकर बाजार जाकर अपनी सब्ज़ी-भाजी लाना| वे बड़ी कर्मठ महिला हैं जो इस समय जयपुर में अपना सेवानिवृत्त आनंदमय जीवन बिता रही हैं| पूर्व प्राचार्य श्री ए. एन. दर भी कभी भुलाए नहीं जा सकते| उन्होंने जब भी कुछ काम दिया तो पूरी सहायता की, पूरा विश्वास रखा और जरूरत पड़ने पर सदा मार्गदर्शन के लिए उपस्थित रहने का उनका गुण मेरे मन में उनके प्रति आदर जगाता है| हमारे वर्तमान प्रधानाध्यापक डॉक्टर माधव देव सारस्वतजी अपने आप में एक प्रभावशाली एवं एक उत्तम प्रशासक हैं। उन्होंने अपने अल्प कार्यकाल में ही विद्यालय की छवि बदल दी है। कार्य स्थल पर वे पूर्ण रूपेण व्यवसायिक हैं और व्यक्तिगत रूप में वे बहुत ही दयालु, सहृदयी और मृदुभाषी हैं ।

प्रश्नक - कोई ऐसा व्यक्तित्व जिसका आपके हृदय में एक विशेष स्थान है?

अहिल्या जी - एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसका मेरे प्रति विशेष सम्मान मेरे लिए सदा कौतुहूल का विषय रहा है| श्रीमती कानन सारस्वत का मेरे प्रति सम्मान बहुत अनमोल है| ऐसा सम्मान बहुत कम देखने में आता है|उनके सौम्य व्यक्तित्व की छाप हृदय पर सदा अमिट है|

प्रश्नक - सिंधिया विद्यालय में कोई ऐसा महत्वपूर्ण प्रसंग रहा है जो आपके हृदय के करीब हो?

अहिल्या जी - महाराजा माधवराव जी के जन्म की पचासवीं वर्षगाँठ विद्यालय में बड़े हर्ष-उल्लास से मनाई गयी| विद्यालय में इस दिन को बड़ी जोर-शोर से मनाने की तैयारियाँ हुईं| ओपन एयर थिएटर को बहुत सुन्दर सजाया गया| सभी अध्यापकों और शिक्षिकाओं ने मिलकर – 'ऊपर गगन विशाल, नीचे गहरा पाताल' गीत गाया | बहुत खुशनुमा शाम थी वह| कार्यक्रम से महाराजा इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने मंच पर आकर कहा- मैं भी गाना गाऊँगा! चलो, कौन हारमोनियम बजाएगा? चटर्जी सर दौड़कर गए और हारमोनियम सँभाला| फिर उन्होंने गीत गाया-'सुहाना सफर और मौसम हसीं--!' बहुत सुन्दर और गरिमामय कार्यक्रम था यह, जीवन में यह प्रसंग हमेशा याद रहेगा|

प्रश्नक - आपकी निश्छल हँसी का मंत्र क्या है?
अहिल्या जी - ये तो मैं बता नहीं सकती कि इसका मंत्र क्या है! मगर मैं अपने पिता श्री विट्ठल राव सुर्वे के स्वभाव के बहुत क़रीब रही हूँ | उनका बिना किसी भेदभाव सभी को बराबर सम्मान देना| जब वह डिप्टी कलेक्टर थे तो उस इलाके का कुख्यात डाकू लोकमन उर्फ़ लुक्का भी उनकी ईमानदार और सज्जनता से प्रभावित था| मेरे पिता से स्नेह भरी डाँट खाकर उसका मन बदला और उसने आत्मसमर्पण किया और शेष जीवन समाज में सम्मान से बिताया| उनकी निश्छलता से एक खूँखार डाकू का मन बदल गया|वही निश्छलता मुझे प्रिय है|देखिये, कोई भी व्यक्ति अपराधी या उद्दंड नहीं होता|किसी की अनदेखी या बुरे निर्णय से ऐसे हालात उपजते हैं कि कोई ख़राब रास्ता ले लेता है|किसी ने उल्टा रास्ता ले भी लिया तो इसका मतलब कतई नहीं है कि वह लौटेगा नहीं या सुधरेगा नहीं| ऐसा कभी नहीं होता कि व्यक्ति बुरा हो गया तो उसके भाव की नदियाँ सूख गईं हों |मेरी दीदी ने उस डाकू का साक्षात्कार लिया था| उससे सहज प्रश्न किया कि तुम्हारी माँ का नाम क्या है? तो उसने सहज उत्तर दिया कि माँ तो माँ होती है माँ का और नाम क्या होगा! मंत्र स्पष्ट है कि हमारे भीतर ये भरोसा सदा रहे कि हर प्राणी निश्छल है!
प्रश्नक - आपका जीवन दर्शन क्या है?
अहिल्या जी - हमें प्रसन्नता पूर्वक जीना चाहिए चाहे विपरीत स्थितियाँ क्यों न हों| प्रसन्न होकर उनका सामना करना चाहिए| जीवन एक चक्र है; स्थितियाँ आती-जाती रहती हैं| हमारे जीवन का कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होना चाहिए| निरर्थक जीवन बेकार है|
प्रश्नक - संगीत और हिंदी को आपने कक्षा में कैसे जोड़ा?
अहिल्या जी - साहित्य और संगीत का चोली-दामन का साथ है| साहित्य संगीत के बिना अधूरा है और संगीत साहित्य के बिना|बस, मेरा काम बहुत आसान हो गया| जब कबीर, सूरदास या कबीर के दोहे एवं पद पढ़ाने होते तो गाकर सुनाती और जब संगीत की शिक्षा दे रही होती है तो निश्चित रूप से साहित्य ही होता जिसकी मुझे धुन बनानी होती|
प्रश्नक - पाठशाला और गृहस्थी|दो कश्तियों पर सवार हो आपने ये यात्रा की| कैसी रही आपकी ये यात्रा?

अहिल्या जी - मैं पहली तो नहीं हूँ|आजकल तो हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्यरत हैं और सफलतापूर्वक घर और बाहर देख रही हैं|देखिये, यदि घर में सभी लोग बाहर की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए सहमत होते हैं तो वे सहायता भी उतनी ही करते हैं|मेरे पति श्री अजय शिंदे का मुझे बराबर साथ मिला|आप सुनकर हैरत करेंगे कि पहले-पहल मैंने नौकरी करने की इच्छा जताई तो किसी ने सहज सहमति नहीं दी बल्कि विचार करेंगे, ऐसा आश्वासन भर दिया|लेकिन जब मेरे जीजाजी के छोटे भाई ने मेरे ससुर को ये सूचना दी कि सिंधिया स्कूल में अध्यापन के लिए जगह है तो उन्होंने सगर्व सहर्ष अनुमति दे दी क्योंकि वे स्वयं इस विद्यालय में पढ़े थे|मेरा मानना है कि घरवाले सभी महिला सदस्यों को इतना प्रेम करते हैं कि उनकी असुविधा और सुरक्षा की चिंता के चलते आसानी से बाहर भेजने को राज़ी नहीं होते| जब सिंधिया जैसे विश्वस्तरीय संस्थान होते हैं जहाँ महिलाओं का सम्मान सदा ऊंचा हो तो समाज में ऐसी दुश्चिंता कभी नहीं होती| मुझे सिंधिया स्कूल पर सदा अभिमान रहेगा|

प्रश्नक - आपको अपने कार्यकाल के दौरान कभी मायूसी हुई? यदि हाँ तो आपने अपने आपको कैसे संभाला?

अहिल्या जी - मुझे ऐसा कुछ भी याद नहीं आता| मैं तो तो उल्टा यह कहूँगी कि मैंने यहाँ अपनी उम्मीद से हमेशा अधिक पाया| सोचा भी नहीं था कि कभी सदन प्रमुख बनूँगी क्योंकि उस समय तीन ही सदन थे| संयोग से एक नए सदन नीमाजी" की नींव रखी गयी और मैं हाउस मास्टर बन गयी|

प्रश्नक - वैसे तो आपको सभी सिंधिया विद्यालय की कोकिला कहते हैं! मगर क्या इससे भी बेहतर सराहना के शब्द कभी सुनीं आपने किसी से?

अहिल्या जी - हाँ! जब मैं पहली बार दिल्ली स्थित अपने साक्षात्कार हेतु 'रेलवे भवन', नई दिल्ली गयी तो स्वयं महाराज माधवराव जी उपस्थित थे अंतिम चयन के लिए| उन्होंने पूछा कि आप कौन-सी सरस्वती वंदना बच्चों को सिखाएँगी- गाकर सुनाइए! सरस्वती वंदना सुनकर महाराजा ने सिर्फ इतना कहा -आपकी आवाज़ बहुत मधुर है! इतनी सरल और सहज सराहना मेरी कभी नहीं हुई|

प्रश्नक - विद्यालय में रहते हुए संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए आपने क्या प्रयास किए?

अहिल्या जी - मुझे प्रसन्नता है कि जूनियर विद्यालय में रहते हुए अनेक नए प्रार्थना गीत सिखाए और, सुगम-संगीत, देशभक्ति गीत एवं शास्त्रीय संगीत की प्रतियोगिताओं की एक नयी परंपरा का श्रीगणेश किया|

प्रश्नक - विद्यालय के बाद आपने अपनी दिनचर्या के विषय में क्या योजनाएँ बनाई हैं?

अहिल्या जी - विद्यालय के बाद में अपना जीवन बिना बंधन के जीना चाहती हूँ स्वच्छंदता से| वैसे मेरी हार्दिक इच्छा है कि अपना अधिक-से-अधिक समय संगीत की साधना में व्यतीत करूँ| अपनी माँ की तरह एक संगीत विद्यालय स्थापित करूँ एवं संगीत का प्रचार-प्रसार करूँ और बचा समय समाज सेवा में लगा दूँ |

MINDSCAPE

Pratham Kapoor (Md, 2023)

Raghav Mahajan (Sh, 2023)

Vasant Bhatt (Rn, 2024)

Old Boys' News

Mr Bishal Kumar Das (Ex- Md, 2010) a young entrepreneur & globetrotter talks about creating opportunities amid pandemic 2020 on the Forbesindia website.

Mr Devendra Darda (Ex- Dl, 1992) has been elected as Chairman of Audit Bureau of Circulations (ABC), which certifies and audits the circulations of major publications, including newspapers and magazines in India.

Mr Achintya Lahiri (1991 Madhav) is doing laudable work in the field of Solid Waste Management in Gorakhpur, and receiving wide accolades for the same. His passions include working in the fields of cleanliness, pollution control, environment, composting, and also in education. He is a member of the Gorakhpur District Environment Committee.

Mr Vipul Vikamsey (Ex-Madhav, 1991) and his son, Mr Nirmit Vikamsey (Ex- Md, 2018) have founded Veon Events, which is putting together an event called "SOW Summit", an online virtual business summit for Start-ups, planned for 22nd -23rd October 2020. It will act as a bridge between start-ups and investors to promote initiatives like Make in India, Start-up India and Vocal for Local.

Old Boys' News

Mr Sanjiv Saraf (Ex- Sh, 1975) has created Jashn-E-Rekhta, which is the world's largest Urdu language literary festival. It is a three-day event held annually in New Delhi that celebrates the Urdu language.

Mr Viraj Kohli (Ex- Mj, 2012) gets recognised by Forbes for protecting India's workforce and saving lives for over a decade. Our congratulations!

Obituary

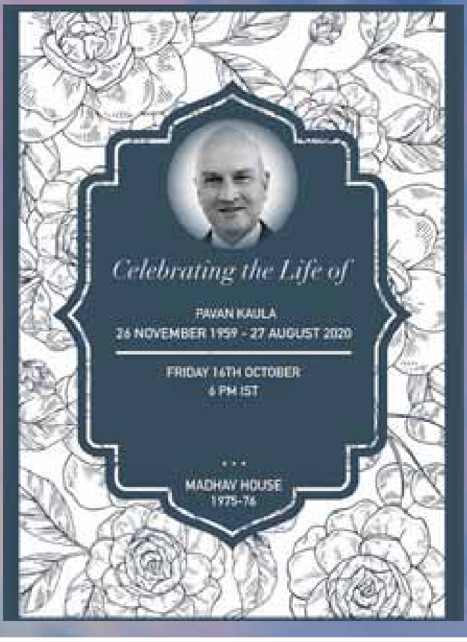

It is with deep sorrow that we inform you of the death of Mr Pavan Kaula (Ex- Md, 1976). An 'In Memoriam' was held on 16th October to pay homage to the deceased soul.

सा विद्या या विमुक्तये

Estd. 1897

The Artist's Interpretation

The artist, Mr Aloke Ghosh, interprets the painting on the cover page as a testimony to the liberation of the teaching- learning transaction at school, through the mode of Online Teaching. We feel that the world has been locked up by the pandemic but we have been ushering in, the light of knowledge through online learning.

Published by : The Principal, The Scindia School, Fort, Gwalior

Staff Editors : Dr Smita Trivedi (English) and Mr Manoj Mishra(Hindi)

Senior Editors : Memoy Mishra, Suyash Bansal, Gaurav Agarwal

Web Support : Mr Raj Kumar Kapoor

Technical Support : Mr Jitendra Jawale

Feedback : smitat@scindia.edu